Seat No. _____

HP-1601030401020200

B. A. (Sem.-II) (CBCS)

(W.E.F. 2016) Examination

April - 2023

Hindi : Compulsory

(आधुनिक हिन्दी काव्य पंचवटी एवं व्याकरण (अनिवार्य)) (Old Course)

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours / Total Marks : **70**

सूचना : (1) सभी प्रश्नों के अंक समान है।
(2) सभी प्रश्नों के अंक दाहिनी ओर दिये गए है।

1 राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए। **14**

अथवा

1 'पंचवटी' खण्डकाव्य की कथावस्तु लिखकर उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

2 खण्डकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'पंचवटी' काव्य की चर्चा कीजिए। **14**

अथवा

2 'पंचवटी' खण्डकाव्य में इतिहास और कल्पना का समन्वय हुआ है – सतर्क उत्तर दीजिए।

3 'पंचवटी' खण्डकाव्य में व्यक्त प्रकृति – चित्रण, संदेश एवं शीर्षक की सार्थकता को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए। **14**

अथवा

3 'पंचवटी' खण्डकाव्य के आधार पर लक्ष्मण का चरित्र–चित्रण कीजिए।

4 'पंचवटी' खण्डकाव्य की कथावस्तु प्राचीन है, परंतु उसमें आधुनिक युग–बोध की अनेक समस्याओं को प्रस्तुत किया है – इस कथन की चर्चा कीजिए। **14**

अथवा

4 'पंचवटी' काव्य के आधार पर वर्तमान नारी के संदर्भ में शूर्पणखा के चरित्र की समीक्षा कीजिए।

5 (अ) पल्लवन कीजिए: 7

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोई।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय॥

अथवा

''देवर तुम कैसे निर्दय हो, घर आये जन का अपमान''

(ब) संक्षेपण कीजिए: 7

धर्म और विज्ञान परस्पर विरोधी माने जाते है क्योंकि धर्म का सम्बन्ध हृदय से है और विज्ञान का बुद्धि से। परन्तु यह मान्यता भ्रममूलक है क्योंकि वास्तव में दोनों का ध्येय एक ही है चाहे मार्ग भिन्न है। धर्म ईश्वर के स्वरूप को पहचानने का मार्ग है और विज्ञान सत्य का सृष्टि का रहस्य जानने का प्रयास करता है। धर्म मानव को प्रेम, दया, उदारता इत्यादि सात्विक वृत्तियों की ओर ले जाता है तो विज्ञान मानव को सत्य का स्वरूप समझता है। इस प्रकार वैज्ञानिक व्यक्ति भी धार्मिक हो सकता है और धार्मिक व्यक्ति भी सत्य को स्वीकार करता है। यदि विज्ञान कहता है कि दो अंश हाईड्रोजन और एक अंश ऑक्सीजन से जल बनता है तो इसमें किसी भी धार्मिक व्यक्ति को कोई आपत्ति नहीं। इसी प्रकार यदि धार्मिक व्यक्ति कहता है कि ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए या व्यक्ति को सदैव सच बोलना चाहिए अथवा प्राणी मात्र से प्रेम करना चाहिए तो उसमें किसी भी वैज्ञानिक को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। इससे हम कह सकते है कि धर्म और विज्ञान के क्षेत्र एक दूसरे से अलग होते हुए भी विरोधी नहीं है।

अथवा

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को जीवन से पूर्णतया तैयार करना है। आज की शिक्षा तो पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करके ही अपने कर्तव्य की सबकुछ सफलता समझती है। शिक्षार्थी को जीवन–जगत से न परिचित किया जाता है और न उसे वास्तविक समस्या को सुलझाने के योग्य बनाया जाता है। आज की शिक्षा सचमुच अव्यवहारिक है। पुस्तकीय ज्ञान संबंधी बातों के अतिरिक्त वह कुछ नहीं जानता। इसके फलस्वरूप राष्ट्र की अपार क्षति होती है। जब नवयुवक वास्तविक जीवन में प्रविष्ट होता है, तब उसकी दशा एक साधनहीन यात्री जैसी हो जाती है। उस समय वह अपने को अपार संसार–सागर के किनारे पाता है। ऐसी दशा में वह कर्तव्यविमूढ़ होकर अपने निरर्थक जीवन को कोसता हैं।